National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(65): 362-365
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

Dr. Tanmay Mandal
Assistant Professor,
Dept. of Education,
CSU, Shri Sadashiv Campus,
Puri, Odisha

Correspondence:
Dr. Tanmay Mandal
Assistant Professor,
Dept. of Education,
CSU, Shri Sadashiv Campus,
Puri, Odisha

डिजिटल युग में मानव-केंद्रित अध्यापक शिक्षा

Dr. Tanmay Mandal

सारांश (Abstract)

वर्तमान समय में डिजिटल तकनीक ने शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence), ऑनलाइन शिक्षण मंच, डिजिटल संसाधन, आभासी कक्षाएँ तथा डेटा-आधारित शिक्षण प्रणालियाँ शिक्षा के स्वरूप को निरंतर परिवर्तित कर रही हैं। इस परिवर्तन ने शिक्षक की भूमिका को केवल ज्ञान प्रदान करने वाले व्यक्ति से आगे बढ़ाकर एक मार्गदर्शक, सहायक, नवाचारकर्ता और अधिगम अनुभवों के डिजाइनर के रूप में स्थापित किया है। ऐसे समय में अध्यापक शिक्षाके समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह भविष्य के शिक्षकों को केवल तकनीकी दक्ष न बनाए, बल्कि उन्हें मानवीय संवेदनाओं, नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और भावनात्मक समझ से भी समृद्ध करे।

मानव-केंद्रित अध्यापक शिक्षा(Human-Centric Teacher Education) इसी आवश्यकता को पूरा करने वाली एक ऐसी अवधारणा है, जिसमें तकनीकी विकास को मानव मूल्यों के साथ संतुलित करते हुए शिक्षक के समग्र विकास पर बल दिया जाता है। यह दृष्टिकोण मानता है कि तकनीक शिक्षा को प्रभावी बनाने का माध्यम है, लेकिन शिक्षक और विद्यार्थी के बीच मानवीय संबंध, सहानुभूति, संवाद और भावनात्मक जुड़ाव शिक्षा की मूल आत्मा हैं।

यह शोधात्मक लेख डिजिटल युग में अध्यापक शिक्षा के बदलते स्वरूप, मानव-केंद्रित दृष्टिकोण की आवश्यकता, शिक्षक की परिवर्तित भूमिका तथा तकनीक एवं मानवीय मूल्यों के संतुलन का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। लेख यह स्पष्ट करता है कि भविष्य की अध्यापक शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो डिजिटल दक्षताओं के साथ-साथ संवेदनशील, चिंतनशील और परिवर्तनकारी शिक्षकों का निर्माण कर सके।

मुख्य शब्द (Keywords):

डिजिटल शिक्षा, मानव-केंद्रित अध्यापक शिक्षा, शिक्षक दक्षता, डिजिटल साक्षरता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, भविष्य के शिक्षक, शैक्षिक नवाचार।

प्रस्तावना (Introduction)

21 वी सदी को तकनीकी परिवर्तन और ज्ञान आधारित समाज का युग कहा जाता है। डिजिटल क्रांति ने मानव जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है और शिक्षा भी इससे अस्पृष्ट नहीं रही है। आज शिक्षा केवल विद्यालय या विश्वविद्यालय की भौतिक सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि डिजिटल प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, वर्चुअल कक्षाएँ और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित शिक्षण उपकरणों के माध्यम से वैश्विक स्तर पर विस्तारित हो चुकी है।

शिक्षा में तकनीक के बढ़ते प्रभाव ने सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को अधिक लचीला, व्यक्तिगत और व्यापक बनाया है। विद्यार्थी अब केवल पाठ्य पुस्तकों पर निर्भर नहीं हैं, बल्कि विभिन्न डिजिटल माध्यमों से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इस परिवर्तन ने शिक्षक की पारंपरिक भूमिका को भी प्रभावित किया है। अब शिक्षक केवल सूचना का स्रोत नहीं है, क्योंकि सूचना तक पहुँच तकनीक द्वारा सरल हो गई है। वर्तमान समय में शिक्षक की वास्तविक भूमिका विद्यार्थियों को सही दिशा प्रदान करना,

आलोचनात्मक चिंतन विकसित करना, नैतिक निर्णय लेने में सहायता करना और सीखने की प्रक्रिया को अर्थपूर्ण बनाना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी शिक्षा में तकनीकी एकीकरण, बहुविषयक दृष्टिकोण, कौशल विकास और शिक्षक क्षमता निर्माण पर विशेष बल दिया है। नीति का उद्देश्य ऐसे शिक्षकों का निर्माण करना है जो बदलते शैक्षिक परिवेश के अनुरूप स्वयं को विकसित कर सकें। हालांकि, डिजिटल परिवर्तन के इस दौर में एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या केवल तकनीकी दक्षता एक अच्छे शिक्षक के निर्माण के लिए पर्याप्त है?

वास्तविकता यह है कि शिक्षा केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह एक मानवीय प्रक्रिया है। एक शिक्षक विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक विकास के साथ-साथ उनके सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए वर्तमान डिजिटल युग में अध्यापक शिक्षाको केवल डिजिटल कौशल तक सीमित न रखकर मानव-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

डिजिटल युग में शिक्षा का बदलता परिदृश्य:

डिजिटल युग ने शिक्षा के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन किया है। पहले शिक्षक केंद्रित शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक ज्ञान का मुख्य स्रोत होता था और विद्यार्थी मुख्य रूप से ज्ञान ग्रहण करने वाले होते थे। लेकिन डिजिटल तकनीक के आगमन के बाद यह संबंध अधिक सहयोगात्मक और संवादात्मक हो गया है। विद्यार्थी अब स्वयं ज्ञान खोजने, विश्लेषण करने और नए विचारों का निर्माण करने में सक्षम हो रहे हैं। डिजिटल शिक्षा के कुछ प्रमुख परिवर्तन निम्नलिखित हैं:

(क) ज्ञान की व्यापक उपलब्धता

इंटरनेट और डिजिटल संसाधनों ने ज्ञान को अधिक सुलभ बनाया है। ऑनलाइन पुस्तकालय, ई-पुस्तकें, शैक्षिक वीडियो और डिजिटल पाठ्यक्रमों ने सीखने के अवसरों को बढ़ाया है। अब विद्यार्थी अपनी आवश्यकता और गति के अनुसार अध्ययन कर सकते हैं।

(ख) व्यक्तिगत अधिगम

डिजिटल तकनीक विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार सीखने के अवसर प्रदान करती है। प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता, रुचि और सीखने की गति अलग होती है, इसलिए डिजिटल माध्यम व्यक्तिगत अधिगम को प्रोत्साहित करते हैं।

(ग) सहयोगात्मक अधिगम

डिजिटल प्लेटफॉर्म ने विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया है। ऑनलाइन चर्चा मंच, वर्चुअल समूह कार्य और डिजिटल परियोजनाएँ विद्यार्थियों में सहयोग और संचार कौशल विकसित करती हैं।

(घ) शिक्षक की भूमिका में परिवर्तन

डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका ज्ञान प्रदाता से बदलकर अधिगम सहायक की हो गई है। शिक्षक को अब विद्यार्थियों को केवल जानकारी देना ही नहीं, बल्कि जानकारी का विश्लेषण करना, उसका सही उपयोग करना और ज्ञान का निर्माण करना सिखाना है।

अध्यापक शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन की आवश्यकता:

शिक्षक किसी भी शिक्षा व्यवस्था की आधारभूत इकाई होते हैं। यदि शिक्षक बदलती परिस्थितियों के अनुरूप तैयार नहीं होंगे, तो शिक्षा में होने वाले डिजिटल परिवर्तन का वास्तविक लाभ प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए अध्यापक शिक्षासंस्थानों की जिम्मेदारी है कि वे भविष्य के शिक्षकों को डिजिटल युग की आवश्यकताओं के अनुसार तैयार करें।

डिजिटल परिवर्तन के संदर्भ में अध्यापक शिक्षा में निम्नलिखित क्षमताओं का विकास आवश्यक है:

(क)डिजिटल साक्षरता

आज के शिक्षक को डिजिटल उपकरणों, ऑनलाइन संसाधनों और तकनीकी माध्यमों के प्रभावी उपयोग की जानकारी होनी चाहिए। डिजिटल साक्षरता केवल उपकरणों को चलाने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है कि शिक्षक यह समझ सके कि तकनीक का उपयोग कब, क्यों और किस प्रकार किया जाए।

(ख) शैक्षिक तकनीकी दक्षता

तकनीक का उपयोग तभी प्रभावी हो सकता है जब उसे उचित शिक्षण पद्धतियों के साथ जोड़ा जाए। शिक्षक को यह समझना आवश्यक है कि कौन-सी तकनीक किस प्रकार के अधिगम उद्देश्य को पूरा करने में सहायक होगी।

(ग) आलोचनात्मक एवं नैतिक डिजिटल समझ

डिजिटल दुनिया में सूचना की अधिकता के साथ गलत सूचना, गोपनीयता और डिजिटल नैतिकता जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। इसलिए शिक्षक को विद्यार्थियों में डिजिटल नागरिकता और जिम्मेदार तकनीकी उपयोग की भावना विकसित करनी होगी।

(घ) मानवीय कौशल का विकास

तकनीक के बढ़ते प्रभाव के बावजूद शिक्षक में सहानुभूति, संवेदनशीलता, संवाद क्षमता और भावनात्मक समझ जैसे गुण आवश्यक रहेंगे। यही गुण शिक्षा को वास्तविक अर्थों में मानवीय बनाते हैं।

मानव-केंद्रित अध्यापक शिक्षाकी अवधारणा:

मानव-केंद्रित अध्यापक शिक्षा एक ऐसी समग्र अवधारणा है जिसमें शिक्षक निर्माण की प्रक्रिया में केवल ज्ञान, कौशल और तकनीकी दक्षता पर ही नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों, भावनात्मक समझ, नैतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व पर भी समान रूप से बल दिया जाता है। यह दृष्टिकोण मानता है कि शिक्षा का अंतिम उद्देश्य केवल सूचनाओं का हस्तांतरण नहीं, बल्कि ऐसे व्यक्तित्वों का निर्माण करना है जो संवेदनशील, रचनात्मक, जिम्मेदार और समाज के प्रति जागरूक हों।

डिजिटल युग में जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालित शिक्षण प्रणाली और डिजिटल उपकरण तेजी से विकसित हो रहे हैं, वहाँ अध्यापक शिक्षाके सामने यह चुनौती उत्पन्न हुई है कि तकनीकी प्रगति के साथ मानवीय पक्ष को कैसे सुरक्षित रखा जाए। मानव-केंद्रित अध्यापक शिक्षा इसी चुनौती का समाधान प्रस्तुत करती है।

इस दृष्टिकोण में शिक्षक को एक तकनीकी विशेषज्ञ के रूप में नहीं, बल्कि एक मानवीय मार्गदर्शक (Human Mentor) के रूप में देखा जाता है, जो विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ उनके भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास में भी योगदान देता है।

मानव-केंद्रित अध्यापक शिक्षा के प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं—

(क) सहानुभूति आधारित शिक्षण

एक प्रभावी शिक्षक केवल विद्यार्थियों की शैक्षणिक आवश्यकताओं को नहीं समझता, बल्कि उनकी भावनाओं, समस्याओं और व्यक्तिगत परिस्थितियों को भी समझने का प्रयास करता है। डिजिटल माध्यमों के बढ़ते उपयोग के कारण व्यक्तिगत संपर्क में कमी आ सकती है, इसलिए शिक्षक में सहानुभूति का गुण और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

(ख) भावनात्मक बुद्धिमत्ता

भावनात्मक बुद्धिमत्ता शिक्षक की वह क्षमता है जिसके माध्यम से वह अपनी और विद्यार्थियों की भावनाओं को समझकर उचित व्यवहार कर सकता है। डिजिटल कक्षाओं और बदलते सामाजिक परिवेश में शिक्षक के लिए धैर्य, संवेदनशीलता और भावनात्मक संतुलन अत्यंत आवश्यक हैं।

(ग) मूल्य आधारित शिक्षा

तकनीकी विकास के साथ नैतिक मूल्यों का संरक्षण आवश्यक है। अध्यापक शिक्षामें ईमानदारी, जिम्मेदारी, सहयोग, सहिष्णुता और सामाजिक न्याय जैसे मूल्यों को शामिल करना आवश्यक है ताकि शिक्षक विद्यार्थियों में मानवीय गुणों का विकास कर सकें।

(घ) चिंतनशील अभ्यास

मानव-केंद्रित अध्यापक शिक्षा शिक्षक को अपने शिक्षण कार्य का निरंतर मूल्यांकन करने और उसमें सुधार करने के लिए प्रेरित करती है। चिंतनशील शिक्षक अपनी शिक्षण रणनीतियों, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और बदलते सामाजिक संदर्भों के अनुसार स्वयं को विकसित करता है।

तकनीक और मानवीय मूल्यों का संतुलन:

डिजिटल शिक्षा ने सीखने के अनेक अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। यदि शिक्षा में तकनीक का अत्यधिक प्रभुत्व हो जाए तो शिक्षक और विद्यार्थी के बीच मानवीय संबंध कमजोर हो सकते हैं।

शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल दक्षता प्राप्त करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण विकास को सुनिश्चित करना है। इसलिए तकनीक को शिक्षा का साधन माना जाना चाहिए, न कि शिक्षा का विकल्प।

मानव-केंद्रित डिजिटल शिक्षा में निम्न संतुलन आवश्यक है—

(क) तकनीकी दक्षता और मानवीय संवेदना का संतुलन

एक शिक्षक को डिजिटल उपकरणों का उपयोग करना आना चाहिए, लेकिन साथ ही उसे विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं को भी समझना चाहिए।

(ख) ऑनलाइन और प्रत्यक्ष संवाद का संतुलन

ऑनलाइन शिक्षा सुविधाजनक है, लेकिन प्रत्यक्ष संवाद विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल, सहयोग और भावनात्मक जुड़ाव विकसित करता है। इसलिए मिश्रित शिक्षण मॉडल अधिक प्रभावी हो सकता है।

(ग) कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानवीय निर्णय क्षमता का संतुलन

AI आधारित उपकरण शिक्षण को सरल बना सकते हैं, लेकिन शिक्षक की रचनात्मकता, नैतिक निर्णय और मानवीय समझ का स्थान नहीं ले सकते। शिक्षक को AI का उपयोग एक सहायक उपकरण के रूप में करना चाहिए।

अध्यापक शिक्षा में मानव-केंद्रित डिजिटल मॉडल की आवश्यकता:

वर्तमान अध्यापक शिक्षाकार्यक्रमों में डिजिटल प्रशिक्षण के साथ-साथ मानव विकास के पहलुओं को भी शामिल करने की आवश्यकता है। भविष्य के शिक्षक केवल तकनीक उपयोगकर्ता नहीं, बल्कि तकनीक के जिम्मेदार और संवेदनशील प्रयोगकर्ता होने चाहिए।

एक प्रभावी मानव-केंद्रित डिजिटल अध्यापक शिक्षामॉडल में निम्न तत्व शामिल किए जा सकते हैं—

o B.Ed. और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में डिजिटल उपकरणों, ऑनलाइन शिक्षण मंचों और शैक्षिक तकनीक के प्रयोग को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

o शिक्षक प्रशिक्षण में Emotional Intelligence, सहानुभूति, संघर्ष समाधान और मानसिक स्वास्थ्य जैसे विषयों को महत्व दिया जाना चाहिए।

o शिक्षकों को डिजिटल सुरक्षा, डेटा गोपनीयता, ऑनलाइन व्यवहार और तकनीकी नैतिकता के प्रति जागरूक बनाना आवश्यक है।

o अध्यापक शिक्षा संस्थानों को ऐसे अवसर प्रदान करने चाहिए जहाँ शिक्षक प्रशिक्षु नई शिक्षण विधियों, डिजिटल उपकरणों और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार नवाचार कर सकें।

डिजिटल युग में मानव-केंद्रित अध्यापक शिक्षाकी चुनौतियाँ:

डिजिटल परिवर्तन ने अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अनेक संभावनाएँ उत्पन्न की हैं, लेकिन इसके प्रभावी क्रियान्वयन के मार्ग में कई चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। मानव-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने के लिए केवल तकनीकी संसाधन उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं है, बल्कि शिक्षक और अध्यापक शिक्षा संस्थानों की मानसिकता, क्षमता और दृष्टिकोण में परिवर्तन आवश्यक है।

(क) डिजिटल विभाजन

डिजिटल शिक्षा की सबसे बड़ी चुनौती डिजिटल संसाधनों की असमान उपलब्धता है। सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों के पास समान रूप से इंटरनेट, डिजिटल उपकरण और तकनीकी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर क्षेत्रों में यह समस्या अधिक दिखाई देती है। यदि डिजिटल शिक्षा को वास्तव में समावेशी बनाना है, तो तकनीकी संसाधनों की समान उपलब्धता सुनिश्चित करनी होगी। अन्यथा डिजिटल परिवर्तन शिक्षा में समानता स्थापित करने के बजाय असमानता को बढ़ा सकता है।

(ख) तकनीकी दक्षता की कमी

कई शिक्षक डिजिटल उपकरणों के उपयोग को लेकर अभी भी पूर्ण रूप से सहज नहीं हैं। केवल तकनीकी उपकरण उपलब्ध करा देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि शिक्षकों को उनके प्रभावी शैक्षिक उपयोग का प्रशिक्षण देना आवश्यक है। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में केवल कंप्यूटर या इंटरनेट के सामान्य उपयोग तक सीमित न रहकर डिजिटल शिक्षण रणनीतियों, ऑनलाइन मूल्यांकन, डिजिटल सामग्री निर्माण और शैक्षिक तकनीक के समन्वित उपयोग पर ध्यान देना चाहिए।

(ग) मानवीय संबंधों में कमी का खतरा

डिजिटल माध्यमों के अत्यधिक उपयोग से शिक्षक और विद्यार्थी के बीच प्रत्यक्ष संवाद कम हो सकता है। शिक्षा केवल सूचना प्राप्त करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह भावनात्मक संबंध, प्रेरणा और सामाजिक अनुभवों की प्रक्रिया भी है। इसलिए डिजिटल शिक्षा में

यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि तकनीक मानवीय संबंधों को कमजोर करने के बजाय उन्हें मजबूत करने का माध्यम बने।

(घ) नैतिक एवं गोपनीयता संबंधी चुनौतियाँ

डिजिटल शिक्षा में विद्यार्थियों के व्यक्तिगत डेटा, ऑनलाइन सुरक्षा और डिजिटल व्यवहार से संबंधित कई नैतिक प्रश्न उत्पन्न होते हैं। शिक्षक को इन चुनौतियों के प्रति जागरूक होना चाहिए और विद्यार्थियों को सुरक्षित एवं जिम्मेदार डिजिटल व्यवहार के लिए तैयार करना चाहिए।

(ङ) परिवर्तन के प्रति मानसिक बाधाएँ

शिक्षा क्षेत्र में किसी भी नए परिवर्तन को स्वीकार करने में समय लगता है। कुछ शिक्षक पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों को अधिक प्रभावी मानते हैं और डिजिटल तकनीक को अपनाने में कठिनाई महसूस करते हैं। इसलिए अध्यापक शिक्षामें परिवर्तन के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण और निरंतर व्यावसायिक विकास आवश्यक है।

मानव-केंद्रित अध्यापक शिक्षाकी संभावनाएँ:

चुनौतियों के बावजूद डिजिटल युग में मानव-केंद्रित अध्यापक शिक्षाके लिए व्यापक संभावनाएँ मौजूद हैं। यदि तकनीक का उपयोग सही उद्देश्य और दृष्टिकोण के साथ किया जाए, तो यह अध्यापक शिक्षा को अधिक प्रभावी, समावेशी और रचनात्मक बना सकती है।

(क) व्यक्तिगत शिक्षक विकास

डिजिटल प्लेटफॉर्म शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार सीखने के अवसर प्रदान कर सकते हैं। प्रत्येक शिक्षक अपनी रुचि, क्षमता और आवश्यकता के अनुसार नए कौशल विकसित कर सकता है।

(ख) वैश्विक ज्ञान और सहयोग के अवसर

डिजिटल माध्यमों ने शिक्षकों को वैश्विक स्तर पर ज्ञान साझा करने और सहयोग करने का अवसर प्रदान किया है। शिक्षक विभिन्न देशों की शिक्षण पद्धतियों, शोध और नवाचारों से सीख सकते हैं।

(ग) समावेशी अध्यापक शिक्षा को बढ़ावा

डिजिटल संसाधन विशेष आवश्यकता वाले शिक्षार्थियों और दूरस्थ क्षेत्रों के शिक्षकों तक गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण पहुँचाने में सहायक हो सकते हैं। इससे शिक्षा में समान अवसर की भावना को बढ़ावा मिलता है।

(घ) नवाचार और रचनात्मकता का विकास

डिजिटल तकनीक शिक्षकों को नए शिक्षण मॉडल विकसित करने के अवसर प्रदान करती है। वर्चुअल प्रयोगशाला, डिजिटल सामग्री निर्माण और ऑनलाइन सहयोगात्मक परियोजनाएँ शिक्षण को अधिक प्रभावी बना सकती हैं।

भविष्य के लिए मानव-केंद्रित अध्यापक शिक्षा का दृष्टिकोण:

भविष्य की अध्यापक शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसमें तकनीकी दक्षता और मानवीय गुणों का संतुलित विकास हो। आने वाले समय का शिक्षक केवल डिजिटल उपकरणों का प्रयोग करने वाला व्यक्ति नहीं होगा, बल्कि वह ऐसा शिक्षाविद् होगा जो तकनीक का उपयोग विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए करेगा।

भविष्य के शिक्षक में निम्न गुणों का विकास आवश्यक है—

डिजिटल दक्षता (Digital Competency)

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence)

आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking)

रचनात्मकता (Creativity)

नैतिक जिम्मेदारी (Ethical Responsibility)

सहयोगात्मक दृष्टिकोण (Collaborative Approach)

जीवन पर्यंत सीखने की प्रवृत्ति (Lifelong Learning Attitude)

इस प्रकार भविष्य की अध्यापक शिक्षा का उद्देश्य केवल तकनीकी रूप से सक्षम शिक्षक तैयार करना नहीं होना चाहिए, बल्कि ऐसे शिक्षक तैयार करना चाहिए जो तकनीक और मानवता के बीच संतुलन स्थापित कर सकें।

निष्कर्ष

डिजिटल युग ने शिक्षा के स्वरूप और शिक्षक की भूमिका को व्यापक रूप से बदल दिया है। तकनीकी विकास ने शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, लचीला और वैश्विक बनाया है, लेकिन शिक्षा की मूल भावना आज भी मानवीय संबंधों, संवेदनाओं और मूल्यों पर आधारित है। मानव-केंद्रित अध्यापक शिक्षा डिजिटल परिवर्तन के दौर में एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें तकनीक को मानव विकास के साधन के रूप में स्वीकार किया जाता है। यह दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि भविष्य का शिक्षक केवल डिजिटल रूप से दक्ष नहीं, बल्कि संवेदनशील, चिंतनशील, नैतिक और परिवर्तनकारी होना चाहिए। अध्यापक शिक्षा संस्थानों की जिम्मेदारी है कि वे ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करें जो शिक्षक प्रशिक्षुओं में तकनीकी कौशल के साथ-साथ मानवीय क्षमताओं का भी विकास करें। जब डिजिटल तकनीक और मानवीय मूल्यों का समन्वय होगा, तभी शिक्षा वास्तव में समावेशी, प्रभावी और भविष्य के लिए तैयार बन सकेगी।

अतः कहा जा सकता है कि "डिजिटल युग में मानव-केंद्रित अध्यापक शिक्षा" केवल तकनीकी परिवर्तन का विषय नहीं है, बल्कि यह शिक्षा के मानवीय स्वरूप को सुरक्षित रखते हुए भविष्य के शिक्षकों के निर्माण की एक नई दिशा है।

संदर्भ सूची

- National Education Policy (2020). Ministry of Education, Government of India.
- पाणिग्रही, मनस रंजन (सम्पा.). (2017). *आईसीटी समेकित अध्यापक शिक्षा: संसाधन पुस्तक (Resource Book on ICT Integrated Teacher Education).* नई दिल्ली
- जोशी, प्रह्लाद रा. (2007). *अध्यापकशिक्षा*, तिरुपति: राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद. (2023). *स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF–SE 2023).* नई दिल्ली: NCERT.
- मोहन, र., एवं सोमशेखर, टी. वी. (2025). *अध्यापक शिक्षा.* नई दिल्ली: PHI Learning Pvt. Ltd.
- दुबे, सत्यनारायण. (2025). *अध्यापक शिक्षा.* प्रयागराज: शारदा पुस्तक भवन प्रकाशन।